विचार बिन्दु

कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य है। –गेटे

भारत में पर्यटन: विविधता, वैभव और चुनौतियां

जब मैं भारत की तुलना उन देशों से करता हूँ, जहाँ मुझे घूमने का अवसर मिला, तो अपने देश की सांस्कृतिक, प्राकृतिक, और ऐतिहासिक समृद्धि पर आश्चर्य और गर्व होता है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ हर यात्री के लिए कुछ न कुछ है। सांस्कृतिक वैभव की बात करें, तो ताजमहल, खजुराहो, अजंता-एलोरा, और कोणार्क के सूर्य मंदिर जैसे स्थल विश्व पटल पर चमकते हैं। त्योहारों की जीवंतता होली, दिवाली, ईद, दशहरा, दुर्गापूजा, जन्माष्टमी, क्रिसमस, ईस्टर और बैसाखी जैसे उत्सवों में झलकती है। प्राकृतिक सौंदर्य के लिए हिमालय की बर्फीली चोटियाँ, राजस्थान और गुजरात के रेगिस्तान, गोवा, केरल, और अंडमान के समुद्र तट, या फिर वन्यजीव अभयारण्य हर किसी को आकर्षित करते हैं। इतिहास प्रेमी हंपी, सांची, कुतुब मीनार जैसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों या पॉन्डिचेरी, गोवा, और कोलकाता जैसे औपनिवेशिक निशानों में खो सकते हैं। साहसिक पर्यटन के शौकीनों के लिए ट्रेकिंग, राफ्टिंग, और पैराग्लाइडिंग जैसे विकल्प हैं, जबकि स्वास्थ्य और अध्यात्म की तलाश में अनेक योग केंद्र और विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह सूची अंतहीन है।

भारत की यह विविधता न केवल देशवासियों को आकर्षित करती है, यह विदेशी पर्यटकों को भी अपनी तरफ खींचती है। राजस्थान का निवासी गोवा या केरल जाकर एक नए अनुभव से समृद्ध होता है, तो दक्षिण भारत का यात्री उत्तराखंड या सिक्किम की वादियों में आश्चर्यचकित हो उठता है। उत्तर भारत के लोग दक्षिण, पूर्व, या पूर्वोत्तर भारत के बारे में कम जानते हैं, और यही बात अन्य क्षेत्रों के निवासियों पर भी लागू होती है। पर्यटन केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक पाठशाला है, जो हमें अन्य संस्कृतियों, जीवन शैलियों, और परंपराओं के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह हमें बेहतर नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है, जो एक-दूसरे के प्रति सहिष्णु और ग्रहणशील हो।

पिछले कुछ दशकों में भारत में पर्यटन का चलन तेजी से बढ़ा है। पहले लोग केवल धार्मिक या पारिवारिक कारणों से यात्रा करते थे, लेकिन अब आमोद-प्रमोद के लिए यात्राएँ आम हो गई हैं। आर्थिक समृद्धि, बेहतर यातायात, और आवास सुविधाओं के विस्तार ने इस बदलाव को बढ़ावा दिया है। साथ ही, लोगों की मानसिकता बदली है-अब वे बचत करने से ज्यादा जीवन का आनंद लेने में विश्वास करने लगे हैं। पले जहां अपने अभ्यास वाले खाने का सुलभ न होना यात्राओं में बाधक बनता था, अब क्योंकि आम जन में भी खान-पान के प्रति उदारता बढ़ी है, यात्रा की यह बाधा काफी हद तक दूर हो गई है, हालाँकि अभी भी कुछ लोग अपरिचित व्यंजनों को अपनाने में हिचकिचाते हैं। अब तो बहुत सारे लोग अपनी जिव्हा तृप्ति के लिए भी यात्राएं करने लगे हैं। नए-नए व्यंजनों का अनुभव यात्रा का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है।

बढ़ते पर्यटन के साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। गर्मियों में पहाड़ी क्षेत्रों में भीड़ और ट्रैफिक जाम आम हो गए हैं। आवास सुविधाएँ अपर्याप्त हैं। कम साधनों वाले पर्यटकों के लिए तो आवास सुविधाएं बहुत ही कम हैं, और उनके विस्तार पर अपेक्षित ध्यान दिया भी नहीं जाता है। सारा ज़ोर सम्पन्न पर्यटकों के लिए सुविधाएं जुटाने पर केंद्रित रहता है। प्राय: देखने में आता है कि पर्यटकों का गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है। पर्यटन स्थलों पर कचरा, विशेष रूप से प्लास्टिक, एक बड़ी समस्या है। धार्मिक स्थल और पवित्र नदियाँ भी स्वच्छता के अभाव में अपनी गरिमा खो रहे हैं। स्थानीय व्यवसायी और सेवा प्रदाता अक्सर पर्यटकों से अधिक मुनाफा कमाने की ललक में गुणवत्ता और नैतिकता को नजरअंदाज कर देते हैं। पर्यटकों के छले जाने के समाचार आम हैं और वे पर्यटन के प्रसार में बाधक भी बनते हैं।

भारत का पर्यटन केवल एक उद्योग नहीं, बल्कि संस्कृतियों, परंपराओं, और लोगों को जोड़ने का एक माध्यम है। यह हमें न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध करता है, बल्कि एक-दूसरे को समझने और सहिष्णु बनने का अवसर भी देता है। यदि हम अपनी कमियों को सुधारें और पर्यटन के काम को गंभीरता, निष्ठा, और ईमानदारी से करें, तो भारत न केवल पर्यटकों का पसंदीदा गंतव्य बनेगा, बल्कि एक बेहतर और एकजुट समाज का निर्माण भी करेगा।

ज़रूरी सार्वजनिक सुविधाओं की कमी भी एक गंभीर मुद्दा है। स्वच्छ शौचालय, पेयजल, और ट्रैफिक प्रबंधन जैसी मूलभूत सुविधाएँ कई स्थानों पर उपलब्ध नहीं हैं। त्योहारी सीजन या छुट्टियों में रेल, बस, और हवाई किरायों में बेतहाशा वृद्धि होती है, जो पर्यटकों के लिए एक बड़ा अवरोधक है। इसके अलावा, पर्यटन स्थलों पर प्रामाणिक जानकारी का अभाव एक बड़ी कमी है। पहले सरकारी पर्यटन विभाग आकर्षक और विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराते थे, लेकिन अब भ्रामक और अवैज्ञानिक जानकारियाँ फैलाने वाले गाइड और निजी प्रकाशन आम हैं। आवश्यक ऑनलाइन जानकारी, जैसे स्थल के खुलने-बंद होने का समय या टिकट की उपलब्धता, भी आसानी से नहीं मिलती। पर्यटन स्थलों के बारे में प्रामाणिक जानकारी देने वाली वेबसाइट्स बहुत ही कम हैं। यह काम सरकार को प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए।

दुनिया के कई देश, जिनके पास भारत जैसी विविधता नहीं है, पर्यटन में हमसे कहीं आगे हैं। 2024 में भारत ने जनवरी से अगस्त तक 6.91 मिलियन विदेशी पर्यटकों का स्वागत किया, जो 2023 के 9.24 मिलियन की तुलना में वृद्धि दर्शाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2024 में विदेशी पर्यटक आगमन 2019 के 10.93 मिलियन के पूर्व-महामारी स्तर को पार कर सकता है। इसके बावजूद, भारत वैश्विक स्तर पर अभी भी पीछे है। उदाहरण के लिए, थाईलैंड ने 2024 में 28.15 मिलियन पर्यटकों को आकर्षित किया। 2024 में भारत का पर्यटन राजस्व लगभग 24 बिलियन डॉलर रहा, जिसके 2028 तक 34.25 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, 2023 में पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय 28.07 बिलियन डॉलर थी, और 2024 में यह और बढ़ने की उम्मीद है। घरेलू पर्यटन भी जोर पकड़ रहा है, 2023 में 2509 मिलियन घरेलू पर्यटक यात्राओं के साथ, और 2024-25 तक यह पूर्व-महामारी स्तर पर पहुँचने की उम्मीद है। ये आँकड़े भारत की पर्यटन क्षमता को दर्शाते हैं, लेकिन बुनियादी ढाँचे, स्वच्छता, और प्रामाणिक जानकारी की कमी जैसे मुद्दों पर ध्यान देना होगा। पर्यटन न केवल आर्थिक समृद्धि लाता है, बल्कि रोजगार सृजन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा देता है, जो आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

यह देखना सुखद है कि इधर कुछ नई और प्रभावी गतिविधियां हुई हैं जिन्होंने पर्यटन के परिदृश्य को बेहतर बनाया है। 2024 में 'चलो इंडिया' और 'देखो अपना देश' जैसी पहलों ने पर्यटन को बढ़ावा दिया। 'चलो इंडिया' ने भारतीय प्रवासियों को विदेशी मित्रों को भारत लाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें 1 लाख मुफ्त ई-वीजा की पेशकश शामिल थी। इसी तरह वाराणसी और अयोध्या (राम मंदिर के कारण) जैसे नए गंतव्यों ने 2024 में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया। यहीं यह ज़िक्र करना भी आवश्यक होगा कि बहुत सारे लोगों का सोच यह है धर्म को पर्यटन का विषय बनाना उसकी शुचिता को आहत करता है। वाराणसी जैसे प्राचीन और पवित्र नगर को जिस तरह नए सांचे में ढाला गया है, उस मॉडल पर भी पुनर्विचार किया जाना चाहिए। दुनिया हमारी प्राचीनता से आकर्षित होती है। अगर वही नहीं रहेगी तो कोई यहां आएगा क्यों! इस बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाना उपयुक्त होगा।

भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ ठोस कदम उठाने की जरूरत है:–

सुविधाओं का विस्तार: स्वच्छ शौचालय, पेयजल, और बेहतर यातायात प्रबंधन जैसी मूलभूत सुविधाएँ सुनिश्चित की जाएँ।

पर्यावरण संरक्षण: पर्यटकों और स्थानीय व्यवसायियों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए जागरूक किया जाए।

प्रामाणिक जानकारी: पर्यटन स्थलों पर विश्वसनीय और वैज्ञानिक जानकारी ऑनलाइन और ऑफलाइन उपलब्ध कराई जाए।

नैतिक व्यवसाय: पर्यटन से जुड़े व्यवसायी अधिक मुनाफे की बजाय पर्यटकों को बेहतर अनुभव देने पर ध्यान दें, ताकि वे बार-बार लौटें और दूसरों को भी वहां आने के लिए प्रेरित करें।

सरकारी पहल: सरकार को पर्यटन स्थलों के रखरखाव, ट्रैफिक नियंत्रण, और उचित मूल्य निर्धारण के लिए सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

भारत का पर्यटन केवल एक उद्योग नहीं, बल्कि संस्कृतियों, परंपराओं, और लोगों को जोड़ने का एक माध्यम है। यह हमें न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध करता है, बल्कि एक-दूसरे को समझने और सहिष्णु बनने का अवसर भी देता है। यदि हम अपनी कमियों को सुधारें और पर्यटन के काम को गंभीरता, निष्ठा, और ईमानदारी से करें, तो भारत न केवल पर्यटकों का पसंदीदा गंतव्य बनेगा, बल्कि एक बेहतर और एकजुट समाज का निर्माण भी करेगा।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था : आवश्यकता और चुनौतियां

अशोक कुमार

"रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था: आवश्यकता और चुनौतियां" एक महत्वपूर्ण विषय है जिस पर विचार करना आवश्यक है। आज के तेजी से बदलते आर्थिक परिदृश्य में, रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह शिक्षा प्रणाली छात्रों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उन्हें विशिष्ट कौशल और क्षमताओं से भी लैस करती है जो उन्हें रोजगार बाजार में सफल होने में मदद करते हैं। रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को भविष्य में रोजगार प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताओं से लैस करना है। यह पारंपरिक सैद्धांतिक शिक्षा से हटकर व्यावहारिक और कौशल-आधारित प्रशिक्षण पर अधिक जोर देती है।

रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था की कुछ प्रमुख विशेषताएं:– **उद्योग की जरूरतों पर आधारित:** पाठ्यक्रम उद्योग की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर डिजाइन किए जाते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों को वही कौशल सिखाए जाएं जिनकी बाजार में मांग है।

व्यावहारिक प्रशिक्षण पर जोर: सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ छात्रों को हैंड्स-ऑन अनुभव और व्यावहारिक कौशल प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं। इसमें इंटर्नशिप, परियोजना-आधारित शिक्षा और कार्यशालाएं शामिल हो सकती हैं।

कौशल विकास पर ध्यान: छात्रों के तकनीकी कौशल के साथ-साथ सॉफ्ट स्किल्स (जैसे संचार, टीम वर्क, समस्या-समाधान) और उद्यमिता कौशल विकसित करने पर भी ध्यान दिया जाता है।

लचीलापन: इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में छात्रों को अपनी रुचियों और करियर लक्ष्यों के अनुसार विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और विशेषज्ञताओं को चुनने की सुविधा मिलती है।

नियमित मूल्यांकन और सुधार: पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों का नियमित रूप से मूल्यांकन किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे उद्योग की बदलती जरूरतों के अनुरूप बने रहें।

भारत में रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था का महत्व:–

भारत एक युवा देश है और यहां बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार की आवश्यकता है। रोजगारपरक शिक्षा प्रणाली इस चुनौती का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है:–

बेरोजगारी कम करना: यह छात्रों को सीधे रोजगार के लिए तैयार करती है, जिससे बेरोजगारी की दर कम हो सकती है।

आर्थिक विकास को बढ़ावा देना: कुशल कार्यबल अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

युवाओं का सशक्तिकरण: यह युवाओं को आत्मनिर्भर बनने और बेहतर जीवन स्तर प्राप्त करने में मदद करती है।

उद्योगों की मांग को पूरा करना: यह शिक्षा प्रणाली उद्योगों की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों के अनुसार कुशल पेशेवर तैयार करती है।

तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल: यह छात्रों को नवीनतम तकनीकों और उद्योग के रुझानों से अवगत कराती है।

भारत में रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था के कुछ उदाहरण:–

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान : ये संस्थान विभिन्न व्यवसायों में कौशल प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

पॉलिटेक्निक कॉलेज: ये इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम: सरकार और निजी संस्थाओं द्वारा विभिन्न व्यावसायिक कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

कौशल विकास मिशन: भारत सरकार ने युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन शुरू किया है। रोजगारपरक शिक्षण व्यवस्था समय की मांग है और भारत के युवाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यदि आपके कोई और प्रश्न हैं तो बेझिझक पूछें।

हालांकि, इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली को लागू करने में कई चुनौतियां भी हैं:–

गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी: रोजगारपरक शिक्षा के लिए विशेष कौशल और उद्योग के अनुभव वाले शिक्षकों की आवश्यकता होती है, जिनकी अक्सर कमी होती है।

अपर्याप्त बुनियादी ढांचा: कई संस्थानों में आवश्यक प्रयोगशालाएं, उपकरण और अन्य संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं।

उद्योग और शिक्षा के बीच तालमेल की कमी: अक्सर उद्योग की जरूरतों और शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदान किए जा रहे कौशल के बीच अंतर होता है।

पाठ्यक्रम का अद्यतन: तेजी से बदलते उद्योग की मांगों के अनुसार पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अद्यतन करना एक चुनौती है।

प्रशिक्षण की लागत: गुणवत्तापूर्ण रोजगारपरक प्रशिक्षण अक्सर महंगा होता है, जो सभी छात्रों के लिए सुलभ नहीं हो पाता।

सामाजिक धारणाएं: कुछ समाजों में व्यावसायिक शिक्षा को पारंपरिक शिक्षा की तुलना में कम महत्व दिया जाता है।

मूल्यांकन और प्रमाणन: छात्रों के कौशल का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन करने और उन्हें मान्यता प्रदान करने के लिए मानकीकृत प्रणालियों का अभाव हो सकता है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार, शिक्षा संस्थानों, उद्योगों और छात्रों सभी को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों का प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचे का विकास, उद्योग के साथ सहयोग, पाठ्यक्रम का नियमित अद्यतन, और व्यावसायिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना महत्वपूर्ण कदम हैं।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभाग
अध्यक्ष राजस्थान विवि. जयपुर,
अध्यक्ष सोशल रिसर्च
फाउंडेशन कानपुर, उत्तर प्रदेश

बागोर में सड़क निर्माण कार्य में लापरवाही पर ग्रामीणों ने विरोध जताया

ग्रामीणों ने सड़क का निर्माण कार्य बंद करवाकर नियमानुसार निर्माण कार्य कराने की मांग की

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के बागोर गांव में पीडब्ल्यूडी विभाग की ओर से बनाई जा रही सड़क को लेकर ग्रामीणों का ग़ुस्सा फूट पड़ा। ग्रामीणों ने विरोध जताते हुए सड़क का निर्माण कार्य बंद करवा दिया। इस दौरान ग्रामीणों ने नियमानुसार सड़क का निर्माण कार्य नहीं होने पर सड़क का कार्य पूरा नहीं होने देने की मांग की है।

विरोध कर रहे ग्रामीणों ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग की ओर से बीलवा से बागोर गांव तक डामरीकरण सड़क का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। नियमानुसार पूर्व में बनी सड़क को जेसीबी से तोड़कर नई सड़क बनानी थी, लेकिन विभाग की ओर से बिना सड़क को तोड़े सड़क का निर्माण कार्य शुरू कर दिया। इस संबंध में दो दिन पहले भी ग्रामीणों ने पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों से बात कर पूर्व में बनी सड़क को तोड़कर नई सड़क बनाने की मांग की थी, लेकिन विभाग के

सूचना पर पीडब्ल्यूडी विभाग के जेईएन मौके पर पहुंचे तथा ग्रामीणों से समझाइश का प्रयास किया।

अधिकारियों ने अनदेखी कर पूर्व में बनी सड़क के ऊपर ही सड़क बिछाने का काम शुरू कर दिया। सड़क निर्माण कार्य में विभाग की ओर से की जा रही लापरवाही पर सैकड़ों ग्रामीण एकत्रित हो गए तथा नियमानुसार सड़क नहीं बनाने पर निर्माण कार्य को बंद करवा दिया।

ग्रामीणों ने बताया कि करीब तीन किलोमीटर की दूरी में 46 लाख रुपए की लागत से सड़क बनाई जा रही है, जिसमें विभाग की ओर से लापरवाही की जा रही है। नियमानुसार सड़क का कार्य नहीं करने तक सड़क का कार्य नहीं होने दिया जाएगा। मामले की सूचना पर पीडब्ल्यूडी विभाग के जेईएन मौके पर पहुंचे तथा ग्रामीणों से समझाइश का प्रयास किया, लेकिन

■ नियमानुसार पूर्व में बनी सड़क को जेसीबी से तोड़कर नई सड़क बनानी थी, लेकिन विभाग की ओर से बिना सड़क को तोड़े ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया

ग्रामीण अपनी मांग पर अड़े रहे।

जेईएन अमित कुमार ने बताया कि मामले की जानकारी उच्च अधिकारियों को दी गई है। उच्च अधिकारियों के निर्देश पर जल्द निर्माण कार्य शुरू करवाया जाएगा। इस मौके पर नगेश चौधरी, संदीप जाट, कृष्ण कुमावत, भवानी नायक, सुनील नायक, शाखा कुमावत, राजू स्वामी, योगेश जाट, प्रमोद जाट, अजय चौधरी, प्रेम कुमावत, शक्ति कुमावत सहित अनेक लोग मौजूद थे।

डीग कलेक्टर ने गांवों में जाकर पेयजल व्यवस्था का जायजा लिया

डीग/भरतपुर, (निसं)। डीग जिले में पानी की आपूर्ति एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जिला कलेक्टर उत्सव कौशल ने रविवार को सुबह दह बजे ही डीग शहर और गांवों की गलियों में घूमकर आम लोगों से सीधी बातचीत की और पानी आपूर्ति के संबंध में फीडबैक लिया। राज्य में भीषण गर्मी की शुरुआत हो चुकी है ऐसे में जल आपूर्ति के संबंध में कहीं भी किसी प्रकार की लापरवाही न हो इस के दृष्टिगत पेयजल व्यवस्था का जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान अधिशाषी अभियंता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग इशू नारंग मौजूद रहे।

निरीक्षण के दौरान रामबाग में लोगों द्वारा अंतिम छोर तक पानी ना पहुंचने की समस्या बताई गई। कलेक्टर ने जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारी को निर्देशित किया कि वे अंतिम छोर तक पानी पहुंचाएं और लोगों ने जो अवैध कनेक्शन लिया हुआ है उनको हटाने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। जो व्यक्ति अवैध कनेक्शन

जिला कलेक्टर उत्सव कौशल ने ग्रामीणों से जानकारी ली।

नहीं हटाते हैं उनके खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए एवं यह भी सुनिश्चित करने के लिया कहा गया कि किसी के घर में गंदे पानी की सप्लाई ना हो। इस दौरान जल स्त्रोतों की निगरानी और पानी के सैंपल की नियमित जांच करने के भी निर्देश दिए गए। कलेक्टर कौशल द्वारा रामबाग, सहायपुर, राजीव कॉलोनी डीग, बहज, श्यामढाक बरौली चौथ सहित अन्य जगहों पर जाकर पानी आपूर्ति की स्थिति का जायजा लिया और स्थानीय नागरिकों की समस्या सुनकर अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने के दिशा-निर्देश दिए गए। कौशल ने कहा कि गर्मी के मौसम में पीएचईडी विभाग के अधिकारी विशेष रूप से सतर्कता बरतते हुए यह सुनिश्चित करें की आम लोगों के घरों तक नियमित पानी सप्लाई पहुंचे।

■ कलेक्टर ने खोह, गुलपाड़ा, बिलोंद और कैथवाड़ा के अस्पतालों का भी निरीक्षण किया

पेयजल के निरीक्षण के पश्चात जिला कलेक्टर ने अस्पतालों का निरीक्षण किया और जिले में स्वास्थ्य सेवाओं का हाल जाना। जिला कलेक्टर ने सीएचसी खोह, गुलपाड़ा एवं पीएचसी बिलोंद और कैथवाड़ा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान खोह और बिलोंद में कुछ कार्मिक अनुपस्थित पाए गए जिनके खिलाफ नियम अनुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। कौशल ने विभिन्न वार्डों में जाकर मरीजों से बात कर चिकित्सालय में मिल रही सुविधाओं के बारे में फीडबैक लिया। साथ ही कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने मरीजों को मिलने वाली दवाइयों के बारे में जानकारी ली और मेडिसिन स्टॉक भी देखा। उन्होंने विभिन्न वार्ड में भर्ती मरीजों से बातचीत की और पूछा कि क्या डॉक्टर समय पर आते हैं, क्या उन्हें किसी भी प्रकार की कोई परेशानी है, क्या अस्पताल में साफ-सफाई रहती है, क्या आपको बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही है, क्या चिकित्सा के दौरान आपको सभी दवाइयां अंदर से दी जा रही है, क्या डाक्टर साहब बाहर की दवाईयां तो नही मंगवा रहे। जिस पर मरीजों द्वारा मिल रही स्वास्थ्य सेवाओं पर संतोष जाहिर किया गया। उन्होंने निर्देश दिये कि राज्य सरकार द्वारा संचालित सभी स्वास्थ्य योजनाओं से मरीजों को लाभान्वित करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी विजय सिंघल ने बताया कि कुछ मुख्य अस्पतालों को छोड़ते हुए सभी को निर्देशित किया गया है कि वह आज के जिला कलेक्टर के निरीक्षण के बाद प्रात: आठ बजे ही चिकित्सा ग्रुप में उपस्थिति पंजिका एवं चिकित्सक, कार्मिक तथा अन्य उपस्थित स्टॉफ की फोटो नियमित रूप से ग्रुप में शेयर करना सुनिश्चित करेंगे।

राशिफल

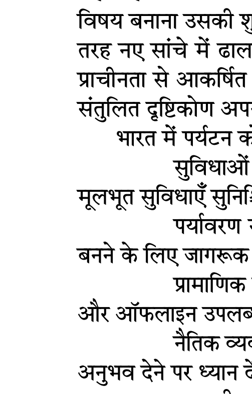

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 5 मई, 2025

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, अश्लेषा नक्षत्र दिन 2:01 तक, वृद्धि योग रात्रि 12:20 तक, बव करण प्रात: 7:36 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:01 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कर्क मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 2:01 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, देवी बगलामुखी जयन्ती, जानकी नवमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:28 तक, शुभ 9:06 से 10:45 तक, चर 2:02 से 3:40 तक, लाभ अमृत 3:40 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:49, सूर्यास्त 6:57

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

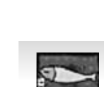

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।